पाइका विद्रोह (Paika Rebellion) : भारत के स्वतंत्रता संग्राम का एक उपेक्षित अध्याय

प्रस्तावना (Introduction)

- भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में सामान्यतः 1857 के [सिपाही विद्रोह (Sepoy Mutiny)] को पहला व्यापक संघर्ष माना जाता है। परंतु ओडिशा (Odisha) के पाइका (Paika) योद्धाओं द्वारा ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी (British East India Company) के खिलाफ वर्ष 1817 में किया गया विद्रोह, इस धारणा को चुनौती देता है। यह विद्रोह लगभग 40 वर्ष पहले घटित हुआ था, लेकिन इतिहास की मुख्यधारा में इसकी पर्याप्त उपस्थिति नहीं रही।
- हाल में एनसीईआरटी (NCERT) की कक्षा 8 की इतिहास की पाठ्यपुस्तक से पाइक विद्रोह की अनुपस्थिति ने एक बार फिर इसे चर्चा में ला दिया है।

पाइका कौन थे? (Who were the Paikas?)

- पाइका (Paika), ओडिशा के गजपति राजाओं (Gajapati Kings) द्वारा नियुक्त पैदल सैनिक थे जिन्हें निश्कर जागीर (rent-free land) प्रदान की जाती थी। ये लोग केवल सैनिक नहीं, बल्कि कृषक भी थे जो शांति के समय अपनी ज़मीन पर खेती करते और युद्ध के समय सैन्य सेवा प्रदान करते थे।
- ब्रिटिश साम्राज्य के विस्तार और औपनिवेशिक प्रशासन की स्थापना ने इस पारंपरिक सैन्य वर्ग को कमजोर कर दिया और धीरे-धीरे उनकी ज़मीन, प्रतिष्ठा और सामाजिक भूमिका का क्षय हुआ।

ब्रिटिश अधिग्रहण और असंतोष की शुरुआत (British Annexation and Early Discontent)

- वर्ष 1803 में कर्नल हार्कोर्ट (Colonel Harcourt) के नेतृत्व में ब्रिटिश सेना ने ओडिशा पर कब्जा किया। खुर्दा (Khurda) के राजा मुकुंद देव द्वितीय (Mukunda Deva II) से संधि करके चार परगने — लेम्बई, रहांगा, सुरई और चबिसकुड़ — ब्रिटिशों को सौंपे जाने की बात हुई। किंतु कंपनी ने यह संधि तोड़ दी, जिससे असंतोष पैदा हुआ।
- राजा के संरक्षक जय राजगुरु (Jayee Rajguru) ने 2000 पाइका सैनिकों के साथ ब्रिटिशों पर दबाव बनाने का प्रयास किया। उन्हें पकड़ कर 1806 में देशद्रोह (waging war against the government) के आरोप में फांसी दे दी गई। राजा को पुरी निर्वासित कर दिया गया।

आर्थिक शोषण और सांस्कृतिक विघटन (Economic Exploitation and Cultural Disruption)

- पाइका वर्ग की निश्कर ज़मीनें छीन ली गईं,
- नए भूमि राजस्व कानून (land revenue systems) लागू किए गए,
- स्थानीय ज़मींदारों की ज़मीनें बंगाली महाजनों (Bengali absentee landlords) को बेची गईं,
- चांदी में कर भुगतान (revenue in silver) की अनिवार्यता ने आदिवासियों को भारी संकट में डाल दिया।
- नमक पर नियंत्रण (Salt Monopoly) और मुद्रा प्रणाली में बदलाव ने आम जनमानस के आक्रोश को और बढ़ा दिया।

पाइका विद्रोह 1817 (The 1817 Rebellion)

- मार्च 1817 में घुमुसर (Ghumusar) क्षेत्र से 400 कोंध (Kondh) आदिवासी परंपरागत हथियारों से लैस होकर विद्रोह के लिए निकले। उनका नेतृत्व बक्शी जगबंधु बिध्याधर महापात्र भ्रामरबर राय (Bakshi Jagabandhu Bidyadhar Mahapatra Bhramarabar Ray) कर रहे थे, जो पूर्व में खुर्दा के सेनापति थे।

विद्रोह की प्रमुख घटनाएँ:

- बनपुर (Banpur) के पुलिस स्टेशन पर हमला,
- सरकारी भवनों में आगज़नी,
- सरकारी कोषागार की लूट,
- कई ब्रिटिश अधिकारियों की हत्या,
- स्थानीय क्षेत्रों में अनेक युद्ध।
- ब्रिटिश सेना ने कुछ महीनों में विद्रोह को दबा दिया। बक्शी जगबंधु जंगलों में भाग गए और 1825 तक छिपे रहे। अंततः उन्होंने शांति वार्ता के तहत आत्मसमर्पण किया।

राजनीतिक उपयोग और ओड़िया अस्मिता (Political Symbolism and Odia Identity)

- ओडिशा में पाइका विद्रोह ओड़िया उप-राष्ट्रवाद (Odia sub-nationalism) का प्रतीक बन चुका है। वर्ष 2017 में विद्रोह के 200 वर्ष पूरे होने पर ओडिशा सरकार ने इसे भारत का पहला स्वतंत्रता संग्राम (First War of Independence) घोषित करने की मांग की थी।
- राजनीतिक प्रतिक्रियाएँ:
- प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 200 से अधिक पाइका योद्धाओं के वंशजों का सम्मान किया।
- राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने बरूणेई (Barunei) में पाइक स्मारक की आधारशिला रखी।
- वर्तमान मुख्यमंत्री मोहन चरण माझी ने पाइक अकादमी (Paika Academy) की घोषणा की।
- एनसीईआरटी ने हाल ही में स्पष्ट किया कि पाइका विद्रोह "प्रारंभिक जन-आंदोलनों (early mass uprisings)" में शामिल होगा।

वर्तमान विवाद *(Recent Controversy)*

- पूर्व मुख्यमंत्री नवीन पटनायक ने पाइक विद्रोह को एनसीईआरटी की नई पुस्तक में ना शामिल करने को "वीरों का अपमान" बताया। इसके जवाब में एनसीईआरटी ने कहा कि यह अध्याय वॉल्यूम 2 में सितंबर-अक्टूबर 2025 में जोड़ा जाएगा।

महत्त्व और विश्लेषण *(Significance and Analysis)*

- यह विद्रोह पूर्व-औपनिवेशिक सामाजिक संरचना के टूटने पर आधारित था।
- इसमें जनजातीय (tribal), कृषक (peasant) और सैन्य वर्ग का संयोजन दिखता है।
- यह विद्रोह दिखाता है कि भारत के कोने-कोने में ब्रिटिश शासन के विरुद्ध असंतोष पहले से ही पनप रहा था।
- इसकी स्थानीयता (regional character), इसे राष्ट्रीय विमर्श से अलग रखती है, परंतु अब समय है कि ऐसे आंदोलनों को इतिहास में उचित स्थान दिया जाए।

निष्कर्ष *(Conclusion)*

- पाइका विद्रोह केवल ओडिशा का क्षेत्रीय संघर्ष नहीं था, बल्कि यह औपनिवेशिक दमन (colonial oppression) के विरुद्ध एक संगठित जन-आंदोलन था। यह भारत के स्वतंत्रता संग्राम की बहु-केंद्रीयता (multi-centricity) को दर्शाता है। ऐसे आंदोलनों को उपेक्षित रखने से इतिहास अधूरा रह जाता है।

पिछले वर्षों के परीक्षा प्रश्न

- **2020: भारत के इतिहास के सन्दर्भ में, "उलगुलान" अथवा महान उपद्रव निम्नलिखित में से किस घटना का विवरण था?**

विकल्प:

A. 1857 के विद्रोह का
B. 1921 के मापिला विद्रोह का
C. 1859 - 60 के नील विद्रोह का
D. 1899 - 1900 के बिरसा मुंडा का विद्रोह

- **Ans: d. 1899 - 1900 के बिरसा मुंडा का विद्रोह**

अभ्यास प्रश्न: *Prelims:*

Q. पाइका विद्रोह 1817 के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. पाइका विद्रोह ओडिशा के गजपति राजाओं द्वारा नियुक्त पैदल सैनिकों द्वारा ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के खिलाफ लड़ा गया था।
2. पाइका विद्रोह का नेतृत्व बक्शी जगबंधु बिध्याधर महापात्र के बजाय ओडिशा के राजा मुकुंद देव द्वितीय ने किया था।
3. विद्रोह के प्रमुख स्थल खुर्दा और बनपुर थे, जहां ब्रिटिश अधिकारियों के खिलाफ संघर्ष हुआ।
4. विद्रोह को ब्रिटिश सेना ने कुछ महीनों में दबा लिया, लेकिन बक्शी जगबंधु बिध्याधर महापात्र ने जंगलों में छिपकर 1825 तक संघर्ष जारी रखा और फिर शांति वार्ता के तहत आत्मसमर्पण किया।

कौन से कथन सही हैं?

A. केवल 1 और 3
B. 1, 3 और 4
C. 2, 3 और 4
D. 1, 2 और 3

Ans: (b) 1, 3 और 4.

Mains:

A. Q. पाइका विद्रोह 1817 को भारत के स्वतंत्रता संग्राम में एक महत्वपूर्ण लेकिन उपेक्षित अध्याय क्यों माना जाता है? इस विद्रोह के कारणों, घटनाओं और इसके सामाजिक और राजनीतिक प्रभावों का आलोचनात्मक विश्लेषण करें। (10 Marks, 150 Words)